लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 2 संख्या: 2 ; जनवरी-जून, 2021

करबी देवी की कविताएँ

बाघजान

(बाघजान की करुण स्मृति में)

चल, कोई बात नहीं, जो हुआ सो हुआ,

अगली बार फिर जनम लेंगे, मनुष्य बनकर

जियेंगे एक सुखभरी जिंदगी-

होगा एक छोटा सा घर, छोटी सी फुलवारी

हरे भरे खेत-खलिहान।

इसबार तो चल, जो हुआ सो हुआ-

आ...हम दोनों मिलकर

इस जली हुई राख से ही

सजा लेते हैं चिता अपनी,

चल कोई बात नहीं,

इस बार जो हुआ सो हुआ।

इस जली हुई राख से ही, सजा लेते हैं

चिता अपनी।

बीमार पृथ्वी

बचपन में सुना था,

ईश्वर, करुणा का सागर है,

क्या वह व्यंग्य था ?

कहने लगे हैं सब

पृथ्वी अब बीमार है।

एक स्पर्श से होता है संक्रमण।

मृत्यु के सागर में ढकेलती है यह कोरोना

माँ के आँचल में, बहन के कोमल हाथों में

पिताजी के चरणों तले

छिपा रहता है यह अतिमारी कोरोना

सावधान-सावधान-

सोचकर पागल सी बन गयी हूँ मैं

आरे यह क्या...

मेरे शरीर में तो उत्ताप है,

साँस जैसे रुक सी गई है,

ओह

मेरे मृत शरीर को खींचकर

कचरे के डिब्बे में फेंक दिया है

मेरे आत्म-परिजन भी न जाने कहाँ हैं !

मेरी आत्मा मुक्ति की तलाश में

भटक रही है

कोरोना के सागर में

मैं डूब रही हूँ

धीरे-धीरे-धीरे...

संपर्क-सूत्र
सहायक अध्यापक, हिंदी विभाग
नगाँव महाविद्यालय(ओटोनोमास)